ग्रंथानुक्रमणिका

आधार ग्रंथ सूची :

गर्ग, मृदुला(2019). मिलजुल मन. सामयिक पेपरबैक्स, नई दिल्ली.

मुद्गल, चित्रा(2020). पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा. सामयिक पेपरबैक्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण.

शर्मा, नासिरा(2017). पारिजात. किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय पेपरबैक संस्करण.

सरावगी, अलका(2019). कलि-कथा : वाया बाइपास. आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), सप्तम संस्करण.

सोबती, कृष्णा(2019). जिंदगीनामा. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, ग्यारहवाँ संस्करण.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

(सपा.)आर्य, साधना. मेनन, निवेदिता. लोकनीता, जिनी(2015). नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पांचवां पुनर्मुद्रण.

अग्रवाल, डॉ. गोपालकृष्ण(1980). समाजशास्त्र. साहित्य भवन, आगरा.

अमरकांत(2016). इन्हीं हथियारों से. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण.

अम्बेडकर, डॉ. भीमराव(2013). हिंदुत्व का दर्शन (खंड-6). डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण.

कमलेश्वर(2020). कितने पाकिस्तान. राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली, अट्ठारहवां संस्करण.

किशोर, गिरिराज(2022). ढ़ाई घर. राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली, पहला पेपरबैक संस्करण.

कुमार, जैनेन्द्र(2000). मुक्तिबोध. पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली,

खेतान, प्रभा(2004). उपनिवेश में स्त्री. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

गर्ग, मृदुला(2022). चित्तकोबरा. राजकमल पेपरबैक्स. नई दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण.

जोशी, मनोहर श्याम(2021). क्याप. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपरबैक सातवाँ संस्करण.

डॉ. अमरनाथ(2018). हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवाँ छात्र संस्करण.

डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल(2012). हिंदी साहित्य का इतिहास. मयूर पेपरबैक्स, नयी दिल्ली, चालीसवां संस्करण.

डॉ.नगेन्द्र(1962). साहित्य का समाजशास्त्र. नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, नयी दिल्ली.

तिवारी, डॉ. रामचन्द्र(2020). हिंदी का गद्य-साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तेरहवाँ संस्करण.

त्रिपाठी, अरविन्द(2013). प्रतिनिधि कविताएँ. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

दिनकर, रामधारी सिंह(2013). संस्कृति के चार अध्याय. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तीसरा संस्करण पुनरावृत्ति.

दुबे, श्यामचरण(1956). भारतीय संस्कृति का स्वरूप. भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र, वाराणसी.

नागर, अमृतलाल(2019). अमृत और विष. लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, सातवाँ पेपरबैक संस्करण.

पांडेय, मदनमोहन(1959). समाजशास्त्र की विवेचना. किताबघर प्रकाशन, कानपुर.

पाण्डेय, डॉ. मैनेजर(2014). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. नवभारत प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, चतुर्थ संस्करण.

पाण्डेय, मैनेजर(2017). आलोचना की सामाजिकता. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

प्रकाश, उदय(2020). मोहनदास. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण.

प्रभाकर, विष्णु(2016). पंखहीन(आत्मकथा). राजपाल एंड सन्ज़ प्रकाशन, संस्करण.

प्रभाकर, विष्णु(2021). अर्द्धनारीश्वर. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपरबैक संस्करण.

प्रेमचंद, मुंशी(1967). साहित्य का उद्देश्य. हंस प्रकाशन, इलाहाबाद.

मिश्र, गोविन्द(2019). कोहरे में कैद रंग. अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय संस्करण.

यशपाल(2020). मेरी तेरी उसकी बात. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवाँ पेपरबैक्स संस्करण.

राधाकृष्ण(1966). धर्म और समाज. राजपाल एंड सन्ज़ प्रकाशन, दिल्ली.

वर्मा, भगवतीचरण(2021). भूले बिसरे चित्र, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण.

वर्मा, सुरेन्द्र(1963). मुझे चाँद चाहिए. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, नई दिल्ली, प्रथम ज्ञानपीठ संस्करण.

वशिष्ठ, सरिता(1993).युगबोध और हिंदी नाटक. निर्मल प्रकाशन, दिल्ली,

विद्याभूषण, डी. आर.(1980). समाजशास्त्र के सिद्धांत. किताबमहल प्रकाशन, इलाहाबाद.

शर्मा, महादेव प्रसाद(2006). राजनीति के सिद्धांत. हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग.

शाह, रमेशचंद्र(2021). विनायक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण.

शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र(2014). हिंदी साहित्य का इतिहास. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.

शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र(2021). चिंतामणि (भाग-1). लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, सत्रहवाँ संस्करण.

शुक्ल, विनोदकुमार(2021). दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपरबैक सातवाँ संस्करण.

शुक्ल, श्रीलाल(1996). अगली शताब्दी का शहर. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

शुक्ल, श्रीलाल(1999). यह घर मेरा नहीं. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

शुक्ल, श्रीलाल(2001). यहाँ से वहाँ. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

शुक्ल, श्रीलाल(2011). राग दरबारी. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, बारहवाँ संस्करण, तीसरी आवृत्ति.

सक्सेना, राजेश्वर(2005). सहनी: व्यक्ति और रचना. वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण.

सहनी, भीष्म(2015). तमस. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, बत्तीसवाँ संस्करण.

साहनी, सं.भीष्म(1975). आधुनिक हिंदी उपन्यास. जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

सिंह, काशीनाथ(2022). रेहन पर रग्घू. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण.

सिंह, जोगेन्द्र(1986). फनीश्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य समाजशास्त्रीय विश्लेषण. ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली.

सिंह, डॉ. रवीन्द्रकुमार(1994). संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

सिंह, बच्चन(2021). आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक चौथा संस्करण.

सिंह, शिवप्रसाद(2021). नीला चाँद. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपरबैक पाँचवाँ संस्करण.

सिंहल, बैजनाथ(1982). अलगाव दर्शन और साहित्य. मंथन प्रकाशन, नई दिल्ली.

सुर्वे, डॉ. गजानन(1987). स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन. साहित्य रत्नालय, कानपुर.

सेठी, डॉ. हरीश कुमार(2008). जीवन-मूल्य-विमर्श. संजय प्रकाशन, नई दिल्ली.

सोबती, कृष्णा(2014). सोबती एक सोहबत. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति.

तिवारी, भोलानाथ(2018). शैली विज्ञान. किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली.

गर्ग, मृदुला(2012). मेरे साक्षात्कार. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

खेतान, प्रभा(1998). स्त्री : उपेक्षिता. हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली.

श्रीवास्तव, गरिमा(2017). देह ही देश(क्रोएशिया प्रवास डायरी). राजपाल एंड सन्ज़, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

डगलस, मालती(2007). सेक्स एंड जेंडर. इनसाक्लोपीडिया ऑफ.

यादव, राजेन्द्र(2022). स्त्री-भूमंडलीकरण : पितृसत्ता के नए रूप (भाग-2). अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

यादव, राजेन्द्र(2022). स्त्री-भूमंडलीकरण : पितृसत्ता के नए रूप (भाग-1). अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

सिंहल, बैजनाथ(1982). अलगाव दर्शन और साहित्य. मंथन प्रकाशन, नई दिल्ली.

कुमार, जैनेन्द्र(1953). साहित्य का श्रेय और प्रेय. पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

कात्यायनी(2009). स्त्रियों की पराधीनता. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

अखिलेश संपा.(2012). श्रीलाल शुक्ल की दुनिया. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

बाबू गुलाबराय(1958). काव्य के रूप. आत्माराम एंड संस, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण.

सहायक ग्रंथ सूची :

यादव, राजेन्द्र(2019). आदमी की निगाह में औरत. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण.

सिंह, वी. के.(2020). फिदेल कास्त्रो. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण.

सोबती, कृष्णा/ वैद, कृष्ण बलदेव(2015). सोबती-वैद संवाद. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण.

सुजाता(2022). दुनिया में औरत. राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली. पहला संस्करण.

मुद्गल, चित्रा(2010). मेरे साक्षात्कार. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

वर्मा, महादेवी(2012). श्रृंखला की कड़ियाँ. लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद, दूसरा पेपरबैक्स संस्करण.

शर्मा, नासिरा(2018). मेरे साक्षात्कार. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

नारायण, कुँवर(2014). रुख़. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

सोबती, कृष्णा(2018). मार्फ़त दिल्ली. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

यादव, राम गणेश(2014). भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी चिंतक. ओरियंट ब्लैकस्वान, तेलंगाना, पहला संस्करण.

पाल, हंसराज(2015). विषयवस्तु विश्लेषण. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

सोबती, कृष्णा(2018). लेखक का जनतंत्र. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

यशपाल(2010). मार्क्सवाद. लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद, पहला संस्करण.

सांकृत्यायन, राहुल(2018). वोल्गा से गंगा. किताब महल, इलाहाबाद, प्रस्तुत संस्करण.

टॉलस्टॉय(1972). युद्ध और शांति. हिंदी पॉकेट बुक्स, हरियाणा.

वुल्फ़, वर्जीनिया(2018). अपना एक कमरा. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

पुष्पा, मैत्रेयी(2017). वह सफर था कि मुकाम था. राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

मेघ, रमेश कुंतल(2007). मिथक और स्वप्न. राधाकृष्ण, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

दुबे, अभय कुमार, सपा (2003). राजनीति की किताब /रजनी कोठारी का कृतित्व. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण.

रॉय, अरुंधती(2019). अपार ख़ुशी का घराना. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण.

यादव, राजेन्द्र(2022). अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य(भाग-1,2). अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

राय, पारसनाथ(2019). अनुसन्धान परिचय. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा.

त्रिपाठी, विश्वनाथ(2014). हिंदी आलोचना. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवीं आवृत्ति.

महर्षि, मनुरचित. मनुस्मृति. साधना पॉकेट बुक्स, दिल्ली.

पत्रिकाएँ

राकेशरेणु. प्र.संपा (2020). आजकल : साहित्य में स्त्री-नवजागरण. प्रकाशन विभाग, दिल्ली. मार्च.

भटनागर, हरि. संपा (2019). रचना समय : सिमोन द बोवुआ विशेषांक. भोपाल. जनवरी-फरवरी.

भटनागर, हरी/शर्मा, बृजनारायण. संपा (2019). रचना समय : अल्बैर कामू विशेषांक. रज़ा फाउंडेशन, भोपाल. अगस्त-सितम्बर.

रमेशचंद्र, संपा (2004). नया ज्ञानोदय. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली. अप्रैल.

शब्दकोश

आप्टे, शिवराम वामन(1988). संस्कृत-हिंदी-कोश. नाग प्रकाशन, दिल्ली.

खां, मुहम्मद मुस्तफा(2015). उर्दू-हिंदी शब्दकोश. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 15वाँ. संस्करण.

डॉ. नगेन्द्र(1988). मानविकी पारिभाषिक कोश(साहित्य-खंड). राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

दास श्याम सुन्दर(1935). हिंदी शब्दसागर. कशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.

नवल (संपा.)(2005). नालंदा विशाल शब्दसागर. आदिश बुक डिपो, नई दिल्ली.

बसु, डॉ. नगेन्द्रनाथ(1919). हिंदी विश्वकोश. बी. आर. पब्लिशिंग कोर्पोरेशन, दिल्ली.

वर्मा, आचार्य रामचंद्र(1993). शब्दार्थ-विचार कोश. राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली.

वर्मा, धीरेन्द्र(सं.2020). हिंदी साहित्य कोश (भाग-1). ज्ञानमंडल लिमिटेड. वाराणसी, द्वि.संस्करण बसंत पंचमी.

वर्मा, रामचंद्र(सं.2065). संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर. कशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, चतुर्दश संस्करण.

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र(2002). बृहत् प्रमाणिक कोश. लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 10वाँ संस्करण.

शुक्ल, रामचन्द्र(1998). लोकभारती हिंदी कोश. लोक प्रकाशन, इलाहबाद.

इंटरनेट वेबसाइट

http://sahitya-akademi.gov.in

https://www.bbc.com/hindi/international/2016/03

https://www.pratibhaekdiary.com

https://hindisamay.com

https://www.wikipedia.org

https://www.who.int/health-topics/suicide

परिशिष्ट

पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के साथ लिया गया साक्षात्कार

साहित्यकार मृदुला गर्ग

1. आप अपना प्रेरणास्रोत किसे मानती हैं| साहित्य में आपका आदर्श कौन है?

उत्तर- मेरा प्रेरणा स्रोत जीवन है। सिर्फ़ मेरा अपना नहीं, उन सभी का जो जब-तब मेरे सम्पर्क में आते हैं। हर व्यक्ति की ज़िन्दगी में कुछ न कुछ ऐसा होता है, जो मेरी संवेदना को झकझोरता है। जीवन की सभी जटिलताएं और दुविधाएं व द्वंद्व लेखन की प्रेरणा देते हैं।

साहित्य में मेरे आदर्श मनोहर श्याम जोशी रहे हैं क्योंकि अपने पात्रों में उनका परकाया प्रवेश अद्भुत होता था। उनके कथ्य असाधारण होते थे और वैचारिकी भी, जो जीवन की उन विसंगतियों को समेटे रहते थे, जो आमतौर पर लोगों की कल्पना से बाहर रहती हैं। साथ ही उनकी शैली और भाषा में व्यंग की अभूतपूर्व व्यंजना रहती थी।

2. कुछ ऐसा जो अब तक आपने नहीं लिखा हो या कोई ऐसा विषय जिसपर बार-बार लिखना चाहती हों?

उत्तर- बहुत कुछ ऐसा है, जिस पर मैंने अब तक नहीं लिखा, विशेष तौर पर राजनीतिक प्रवंचनाओं पर। बार-बार किसी विषय पर लिखते जाने के बारे में सोचना ही इतना उबाऊ है कि उसकी इच्छा करना नामुमकिन है।

3. पुरस्कार वितरण की प्रक्रिया को लेकर समय-समय प्रश्न उठाए जाते रहे हैं इस विषय पर आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर- पुरस्कारों की प्रक्रिया तो ऐसी ही हुआ करती है पर उसमें शायद पारदर्शिता की कमी है, जिसे बदलना चाहिए।

4. पुरस्कार की उपयोगिता को लेकर आपकी क्या राय है?

उत्तर- पुरस्कार की उपयोगिता इतनी भर है कि उसके मिलने पर पुरस्कृत क़िताब का नाम लोगों की नज़र में आ जाता है, जिससे कुछ हद तक उसे पाठक मिल जाते हैं।

5. आपने अपने उपन्यास 'मिलजुल मन' में विस्थापन को अवसर की तरह दर्शाया है| आज के समय में हो रहे विस्थापन को आप कैसे देखती हैं, और आपकी नजर में विस्थापन क्या है?

उत्तर- विस्थापन एक त्रासद और मर्मान्तक घटना होती है। जो भी व्यक्ति या परिवार उससे होकर गुज़रता है, उसे उसके दर्द से उबरने में समय लगता है। 'मिलजुल मन' में कुछ खास हालात होते हैं, जिनकी वजह से एक व्यक्ति उसमें भी व्यापारिक फ़ायदा खोज लेता है। इसका यह मतलब कदापि नहीं है कि सभी के लिए विस्थापन "अवसर" होता है! कभी-कभी बन जाता है, बस।

6. क्या एक स्त्री का जीवन विवाह और प्रजनन से ही पूर्ण होता है?

उत्तर- नहीं, एक स्त्री का जीवन प्रजनन और विवाह से तो बिलकुल ही पूर्ण नहीं होता है|

7. आपने अपने उपन्यास 'मिलजुल मन' में गालियों का प्रयोग न के बराबर किया है| ऐसा नहीं है कि जिस समाज को आपने उपन्यास में दिखाया है वैसे समाज में गालियों का प्रयोग न होता हो| खासकर जिन गालियों का प्रयोग किया जाता रहा है ये सभी गालियाँ स्त्री विरोधी होती हैं ऐसा क्यों? साहित्य में इसके प्रयोग को लेकर आपकी क्या राय है?

उत्तर- ये उस पर निर्भर करता है कि कथा क्या है| उसका कथ्य क्या है| उसके किरदार कौन हैं| और कौन सी गाली है| और कोई जानबूझ कर प्रयोग नहीं करता किरदार की भाषा में आती हैं गालियां तो लेखन में भी आ जाती हैं| यहाँ भी मैंने जैसा किरदार हुआ है वैसी भाषा का प्रयोग किया है| मेरे हिसाब से जहाँ जो जरूरत हो वहाँ वो होना चाहिए| यह सही है कि ज़्यादातर गालियाँ स्त्री विरोधी होती हैं| गलत ठीक नहीं होता है साहित्य में हो सकता है कि वो आन्तरिक तर्क के खिलाफ है जैसे किरदार चल रहा है उस तरह से|

8. आत्महत्या आज के समाज की चिंतनीय समस्या है, इस विषय पर आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर- आत्महत्या हमेशा से हर समाज में चिन्ता का विषय रही है। उसके कारण जानना महत्वपूर्ण है। अभाव के कारण की गई आत्महत्या सबसे दुखद होती है।

9. क्या कानून और आरक्षण मानसिक बँटवारे को सामान्य कर सकता है?

उत्तर- नहीं

10. उपन्यास 'मिलजुल मन' में चमनदास जैन और शमित के अलगाव बोध को उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है| आज के समय में आप इसे कैसे देखती हैं?

उत्तर- चमनदास जैन और शमित के मानसिक असंतुलन को जैसे देखती हूँ, वह तो उपन्यास में विस्तार से अभिव्यक्त हो चुका है। वो मेंटली चैलेंज्ड है, दिमागी तौर पर उसमें असंतुलन है| वो दिमागी बीमारी है, चमनदास को| शमित जो है वो सिर्फ एक एल्कोहलिक है| हो सकता है हीन भावना भी हो|

मृदुला गर्ग ई 421(भूत्ल) जी के -2 नई दिल्ली 110048

साहित्यकार नासिरा शर्मा

1. आप अपना प्रेरणास्रोत किसे मानती हैं| साहित्य में आपका आदर्श कौन है?

उत्तर- मेरा प्रेरणास्रोत मेरा परिवार है, जो मुझे लिखने और सोचने की आजादी देता है|

2. कुछ ऐसा जो अब तक आपने नहीं लिखा हो, या कोई ऐसा विषय जिसपर बार-बार लिखना चाहती हों?

उत्तर- बार-बार तो नहीं लिखना चाहती किसी एक विषय पर लेकिन हाँ कुछ किरदार हैं जो बार-बार आ जाते हैं| जैसे कुछ दलित किरदार हैं, पीड़ित किरदार हैं, दुखियारे हैं, स्त्री किरदार हैं, बच्चे हैं, पशु-पक्षी हैं, यह सारे विषय मेरे प्रिय हैं जब भी मैं लिखती हूं यह सब अपने आप आ जाते हैं अलग-अलग शक्ल में

3. पुरस्कार वितरण की प्रक्रिया को लेकर समय-समय प्रश्न उठाए जाते रहे हैं इस विषय पर आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर- कभी-कभी जो पुरस्कार प्रक्रिया है वह सीधी-साधी रहती है कभी-कभी बड़ी पेचीदा बन जाती है और कभी-कभी यह हो जाता है कि तीन लोग रहते हैं या पांच लोग रहते हैं तो जिधर पलड़ा भारी होता है उधर फैसला हो जाता है| तो जो अच्छे लेखक हैं उनके नाम आते हैं तो लोगों को लगता है कि ठीक मिला और जिन लेखकों को पसंद नहीं किया जाता है या कहा जाता है कि वह अभी और लिखते फिर मिलता तो यहां से फिर एतराज होना शुरू होता है|

4. पुरस्कार की उपयोगिता को लेकर आपकी क्या राय है?

उत्तर- उपयोगिता की बात कर रहे हैं तो एक समारोह हो जाता है लेखक फोकस में आ जाता है और जो लोग नहीं भी साहित्य पढ़ते हैं उनको भी लगता है कि कोई ऐसा है जिसे पढ़ा जा सकता

है और अर्थात थोड़ी बहुत बिक्री हो जाती है और कुछ और पाठक मिल जाते हैं बस इसकी इतनी ही उपयोगिता है लेकिन फिर किताब ही आपकी बोलती है कि वह कैसी है क्योंकि वह सब तो लोग भूल जाते हैं कि किसको कौन सा पुरस्कार मिला या नहीं मिला लेकिन यह किताब ही है जो आपके लेखन को सत्यापित करता है|

5. **आपने अपने उपन्यास 'पारिजात' में विस्थापन को अवसर की तरह रेखांकित किया है| आज के समय में हो रहे विस्थापन को आप कैसे देखती हैं, और आपकी नजर में विस्थापन क्या है?**

उत्तर- इस तरह का जो विस्थापन है आदमी अपनी तरक्की के लिए करता है| और व्यक्तिगत रूप से अपनी इच्छा से करता है तो वह एक अलग बात हुई| लेकिन अगर बंटवारे के रूप में करता है या जंग के रूप में करता है तो वह बहुत दुखद होता है| आज के समय में तो विस्थापन हर यंग लोगों की दिल की बात है क्योंकि उनको ना मौके ना मिल रहे हैं पढ़ाई के जो वह चाहते हैं और नौकरियां| तो सभी को लगता है कि बाहर कमाने जाए और जो लोग बहुत पढ़े-लिखे नहीं हैं उनका दिल चाहता है कि वह कमाने जाए मिडल ईस्ट की तरफ ताकि उनकी फैमिली कुछ खा पी ले| इस समय में हिंदुस्तान का जो मूड है, उसके अनुसार ज्यादातर लोग बाहर जाना ही चाहते हैं साथ ही कुछ सियासी दबाव है इस वजह से भी लोग चाहते हैं कि जाएं लेकिन जो उनकी इच्छा है बाहर जाने कि वह उनके बैकग्राउंड पर भी निर्भर है| अगर उनके पास इतने पैसे नहीं है, नौकरी बाहर नहीं लग रही है और बुलावा नहीं आता है तो फिर वह हसरत दिल में ही रह जाती है|

तो क्या पलायन, विस्थापन, प्रवास एक ही है तीनों के मायने एक ही है?- बिल्कुल सही कह रही हो जैसे स्त्री अलग-अलग हो सकती है किसी अंग्रेज औरत से मैंने पूछा था कि हमारे यहां हिंदुस्तान में और आपके यहां में क्या फर्क है| तो उसने कहा फर्क यह है कि इकोनॉमी हर जगह उतनी अच्छी नहीं है लेकिन यह है कि आपका लोग बाहर निकल जाते हैं काम करने के लिए लेकिन हमारे लोग जो है वह बाहर नहीं जाते कोई काम करने के लिए यही हकीकत है

6. क्या एक स्त्री का जीवन विवाह और प्रजनन से ही पूर्ण होता है, आज के समय में इसे आप कैसे देखतीं हैं?

उत्तर- बिलकुल भी नहीं|

7. क्या कानून और आरक्षण मानसिक बंटवारे को सामान्य कर सकता है?

उत्तर- कानून तो कोई मानता नहीं| कानून तो बहुत बने मैं अपने जीवन के 70-75 साल की जिंदगी में देख रही हूं कि कानून घर में भी बनते हैं कानून बाहर भी बनते हैं लेकिन सब तोड़े जाते हैं| और आरक्षण जिन लोगों को मिल रहा है वह तो उसका फायदा उठा रहे हैं लेकिन मिसाल

के तौर पर जो दलित हैं वो तो पिसता है दलित की दुर्गति होती है| लेकिन दलित हमारे यहां संविधान भी लिखता है दलित हमारे यहां बांसुरी भी बजाता है तो कहने का मतलब यह है कि सामूहिक रूप से हिंदुस्तान की सोच को बदलने की जरुरत है| दरअसल मैं आरक्षण के खिलाफ हूं| मुझे लगता है कि सवर्ण हो या दलित हो मुस्लिम हो या जैन हो जिनकी बुरी हालत है वाकई बुरी हालत है उनके लिए आरक्षण होना चाहिए| उस परिवार को कुछ देना चाहिए क्योंकि शुरुआत में हिंदुस्तान में तो उस वक्त कुछ नहीं था अब तो ऐसा कुछ नहीं है|

8. तकनीक के स्तर पर हम जितने संपन्न हुए हैं, भावनात्मक स्तर पर उतने ही शून्य होते जा रहे हैं| इस विषय में आपकी क्या राय है?

उत्तर- तकनीक के स्तर पर शून्य थोड़े हुए हैं पर आहत ज्यादा हुए हैं| बहुत बुरी तरह आहत होते हैं| यह तो हो रहा है बहुत दिनों से मैंने तो इसके ऊपर लिखा भी था कुइयांजान में कि जिस तरह पानी का स्तर नीचे जा रहा है वैसे ही संवेदना का स्तर भी नीचे जा रहा है जो कि आज के अजीबो गरीब स्थिति को दर्शाता है| और जो लोग जज्बाती होते हैं जज्बात को अहमियत देते हैं वे लोग ठोकरे खाते हैं|

9. रूही के स्वप्न का क्या आशय है? स्वप्न के प्रतीक को आप कैसे देखतीं हैं? फ्रायड के सिद्धांत को यहाँ कितना उचित मानती हैं?

उत्तर- कभी-कभी आने वाले हादसे स्वप्न में संकेत दे जाते हैं| हाँ स्वप्न मेरी राइटिंग(लेखन) में बहुत है पता नहीं क्यों| कोई मनोविज्ञान को जानने वाला इंसान ही बता सकता है और इस पर बात कर सकता है कि मैं इतने सपने क्यों डालती हूं| एक चीज जो मैं तुम्हें बताना चाहूंगी फ्रायड ने जब फलसफा दिया अपना तो उसका वहीं तक महत्व था| तब उन्होंने सोचा नहीं था कि औरत बियोंड अपने जिस्म जिंदगी को खोज लेगी| आज की औरत जब रात को सोने जाती है तो वह सोचती है कि कल ऑफिस में क्या करना है, प्रोजेक्ट को क्या करना है, तो उसके जो अच्छे बुरे सपने हैं वह उसके काम से जुड़ जाते हैं, बौद्धिक क्षमता से जुड़ जाते हैं, सामाजिक जरूरत से जुड़ जाते हैं तो वह वहां तक महदूद नहीं रह पाती है| फ्रॉयड का कहना अपनी जगह ठीक है जब तक वह जिंदा रहे अपने माहौल के हिसाब से उन्होंने थीसिस दी लेकिन थीसिस अपनी जगह है आज औरत इससे आगे निकल गई है|

10. आपके इस उपन्यास में गालियों का प्रयोग न के बराबर है| ऐसा नहीं है कि जिस समाज को आपने उपन्यास में दिखाया है वैसे समाज में गालियों का प्रयोग न होता हो| कुछ साहित्यकारों ने तो पूरा उपन्यास गालियों के प्रयोग से भर रखा है| साहित्य में गालियों का प्रयोग कितना उचित है इस विषय पर आपकी क्या टिप्पणी होगी?

उत्तर- जरूरत हो तो आधी अधूरी गाली दे देनी चाहिए लेकिन मोटे-मोटे तरीके से| बड़ी-बड़ी गाली देना या लिखना कोई मतलब नहीं बनता है, उसकी जरूरत नहीं है जिससे कुछ लोगों के मुंह का मजा बिगड़ जाता है और मजा उतना ही होना चाहिए जितना इशारा हो| इतना ही अगर कोई लिख दे उसने गाली बकी जैसे अक्षयवट में थोड़ी बहुत गलियों का प्रयोग किया गया है| क्योंकि इलाहाबाद में गाली बिना बके लोग आगे बढ़ते ही नहीं| मर्द अपनी तरह से प्रयोग करते हैं और औरतें भी अपनी तरह से गाली बना रखी हैं लेकिन इसका प्रचलन नहीं है| जितना खुलकर पुरुष करते हैं उनके लिए वह आम नहीं है, इसलिए साहित्य में भी इस तरह से नहीं दिखता है|

11. उपन्यास में 'काज़िम' के माध्यम से आपने आत्महत्या की आंशिक रूप से चर्चा की है| बढ़ती आत्महत्या की समस्या को लेकर आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर- आत्महत्या फ्रस्ट्रेशन है क्योंकि दूर-दूर तक जो लोग कहते हैं कायरता है मैं कहती हूं कायरता नहीं है| बल्कि इतनी जबरदस्त बेबसी है कि इंसान मजबूर हो जाता है उस तरह का काम करने के लिए| हालत ठीक होंगे तो कोई क्यों करेगा|

साहित्यकार अलका सरावगी -

1. आप अपना प्रेरणा स्रोत किसे मानती हैं| साहित्य में आपका आदर्श कौन है?

उत्तर- प्रेरणा स्रोत के तौर पर तो मैं अशोक शेखसज्जा जी को मानती हूँ, जो साठोत्तरी दौर के बहुत अच्छे कथाकार और पत्रकार थे| जिनसे मेरा परिचय हुआ जब मैं 24 वर्ष की थी और उनकी प्रेरणा से ही मैंने लिखना शुरू किया| साथ ही लेखन के प्रति जो मेरी दृष्टि बनी वह उनके ही कारण बनी| साहित्य में मैं आदर्श के तौर पर मुझे बड़े कैनवास पर लिखने वाले लेखक जैसे वी.एस. नायपॉल से शुरू में उनसे बहुत प्रभावित हुई थी| उसके बाद लेटिन अमेरिकन लेखक गेब्रियल गार्सिया मार्खेस और बोर्खेस को पढ़ा| मुख्य रूप से जो विदेशी लेखक हैं उनसे मैं प्रभावित हुई और भी कई नाम हैं जो गिनाये जा सकते हैं| मेरे लेखन में जो एक व्यापकता आई है मेरी दृष्टि में रचना को लेकर उसके पीछे इनका योगदान रहा है काफी| और हिंदी में जो मुझे बहुत अच्छे लगते रहे हैं उनमें अज्ञेय, निर्मल वर्मा, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, यशपाल, उदय प्रकाश, विनोद कुमार शुक्ल, गीतांजलि श्री और भी नए लेखक हैं जिनको पढ़ने से अच्छा लिखने की प्रेरणा मिलती रही है| हमारे पहले के जो लेखक हुए हैं उनसे तो निश्चय ही हमारी भाषा और साहित्य का संस्कार बना|

2. कुछ ऐसा जो अब तक आपने नहीं लिखा हो, या कोई ऐसा विषय जिसपर बार-बार लिखना चाहती हों?

उत्तर- मुस्लिम स्त्रीयों को लेकर बहुत दिनों से मेरे दिमाग में है कि उन पर एक उपन्यास लिखूं और हो सकता है कि मेरा अगला उपन्यास वही होगा|

3. पुरस्कार वितरण की प्रक्रिया को लेकर समय-समय पर प्रश्न उठाए जाते रहे हैं इस विषय पर आप क्या कहना चाहेंगी? पितृसत्तात्मक सोच को क्या आप पुरस्कार के क्षेत्र में भी देखती हैं?

उत्तर- दरअसल इसमें भी एक सक्रिय राजनीति होती है जहां लोग एक दूसरे से मिलते हैं एक दूसरे को रिझाने की कोशिश करते हैं कि उनको पुरस्कार मिल जाए| चूँकि दिल्ली में मेरा बहुत ज्यादा आना-जाना नहीं रहता है लेकिन पुरस्कार को लेकर कंट्रोवर्सी तो कई तरह की होती रहती है| पुरुष वर्चस्व तो है ही इसमें कोई शक नहीं है और बार-बार हम इनसे गुजरते भी हैं और इस तरह की कई बातें हैं जिसमें आज ही मैंने कहीं पढ़ा की कथाकारों पर कहीं एक कोई संकलन निकला है जिसमें एक भी स्त्री लेखिका शामिल नहीं की गई है| ऐसा इसलिए कि स्त्री लेखन को हमेशा दोयम दर्जे का लेखन माना जाता रहा है, जैसे रामचंद्र शुक्ल की अगर किताब उठाएं तो उसमें स्त्री लेखिकाओं का नाम फुटनोट की तरह से लास्ट में दिखाया गया है| कवयित्रियों का वर्णन फुट नोट की तरह किया गया है।

स्त्री लेखन को लेकर जो धारणा बनी हुई है वह यह है कि वो कोई बड़ा लेखन जो नई बात कहे नए तरीके से कहे और ज्यादा प्रासंगिक मुद्दों पर केन्द्रित हो नहीं कर सकती हैं| ऐसा माना जाता है कि स्त्रियां ज्यादातर प्रेम व अपने अनुभव से सीमित संसार पर ही लिखती रही हैं| शायद यह भी एक कारण रहा है| और बाकी पुरस्कार वितरण को लेकर कई बार तो दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी ज्यादा काम करती है मुझे ऐसा भी लगता है| मुझे जैसे श्रीकांत वर्मा पुरस्कार मिला था तो कुछ पत्रकार ने कहा आपको आउट ऑफ टर्न कैसे मिल गया| मुझे तो इसकी जानकारी भी नहीं थी कि इस नाम से कोई पुरस्कार भी है और मुझे मिलने वाला है| मैनें कहा अच्छा होगा कि आप उन संस्था के आयोजकों से पूछें ना कि मुझसे कि उन्होंने मुझे क्यों दिया| इस तरह की तमाम जोड़-तोड़ की बातें पुरस्कार के सन्दर्भ में चलती रहती हैं इसके कारण क्या हैं कि पुरस्कारों की विश्वसनीयता और उनके प्रति जो आदर भाव था वह काम होता ही है।

4. पुरस्कार की उपयोगिता को लेकर आपकी क्या राय है?

उत्तर- देखिए पुरस्कार को तो एक तबका यह मानता है कि इस तरह का जो पुरस्कार है वह एक तरह का वर्ग भेद पैदा करता है| जिनको साहित्य अकेदमी पुरस्कार मिल गए वह एक अलग कैटेगरी हो गई| बहुत से ऐसे रचनाकार हैं जिनकी योग्यता या जिनकी कोई किताब बहुत बेहतरीन

है मिलना चाहिए था पर नहीं मिला तो ऐसा भी होता आया है| इसलिए उस दृष्टि से देखें तो कुछ गलत भी लगता है और बाकी यह है कि जब किसी कृति को पुरस्कार मिलता है तो वह कृति एक लाइमलाइट में आती है| मुझे लगता है लेखक से ज्यादा कृति लाइमलाइट में आती है, और उसको पढ़ने के प्रति लोगों का रुझान भी बढ़ता है| कोई किताब तब ज्यादा पढ़ी जाती है जब उसके बारे में हम चर्चा सुनते हैं या लगता है कि उसको पुरस्कार मिला है तो देखें कि उसमें क्या लिखा है| उनकी उपयोगिता तो यही है कि उसे बहुत सारे पाठक पढ़ते हैं| अपने हिंदुस्तान में तो पुरस्कारों के संग में ऐसा कम होता है लेकिन विदेशी पुरस्कार जैसे बुकर हो गए जिनको मिलते हैं उनके लाखों में बिक्री होती है तो हमारे यहां मान सकते हैं कि कम से कम हजार सौ में तो पाठक की बढ़ोतरी होती ही होगी|

5. आपके उपन्यास में किशोर बाबू के पूर्वज बंगाल आकर बस जाते हैं फिर कभी नहीं जाते| आज के समय में हो रहे विस्थापन को कैसे देखतीं हैं, आपकी नजर में विस्थापन क्या है?

उत्तर- देखिए किशोर बाबू का जो विस्थापन है यानी मारवाड़ी समुदाय का, वह आर्थिक कारणों से ही था| चूँकि यहाँ पर अंग्रेज राज कर रहे थे और जो पैसा था वह कोलकाता में था इसलिए तमाम लोग कलकत्ते में आकर बसे| उसके अलावा मुंबई, मद्रास, हैदराबाद, बर्मा, असम तक भी गए| इसके पीछे एक कमर्शियल रीज़न था जो विस्थापन था| आज भी यह विस्थापन जारी है क्योंकि अभी मैं देखती हूं कि अब हमारे आसपास ऐसे कई मारवाड़ी परिवार हैं जिनके बच्चे दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर में जॉब करने जा रहे हैं| अभी भी ऐसे विस्थापन के पीछे आर्थिक कारण ही है| जैसे राजस्थान में जिन लोगों ने हवेलियां बनाई वह हवेलियां खाली पड़ी हुई हैं क्योंकि लोग वापस गए ही नहीं यहीं रह गए| वैसे ही जो कलकत्ता का बड़ा बाजार इलाका है वहां जो मारवाड़ी रहते थे वह सब साउथ कोलकाता में शिफ्ट हो गए तो उनके भी जो मकान बने हुए हैं वह सब अभी खाली पड़े हैं या बेच दिए गए हैं या ताला बंद पड़े हैं| तो इस तरह के विस्थापन कमर्शियल कारणों से होते हैं और बाकी जो विस्थापन है वो मेरा जो सातवां उपन्यास है 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' वह पार्टीशन के समय जो बहुत बड़ा विस्थापन हुआ था उसे दर्शाता है| आज भी बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिनके माता-पिता विस्थापित होकर आए वो बच्चे थे जिस समय विस्थापन हुआ| इस बात को 75 साल बीत चुके हैं| बंगाल से विस्थापन लगातार होता रहा है लोग चले आते रहे हैं| खासकर 71 तक तो काफी विस्थापन हुआ है जिन पर वह उपन्यास आधारित भी है| और आप असम में रहती हैं तो आप देख रही हैं कि वहां भी जब उल्फा का मूवमेंट हुआ तो बहुत सारे लोगों के परिवार वहाँ से निकल आए| इसी तरह बंगाल में भी जब नक्सलवादी आंदोलन हुआ था तो कोलकाता में बहुत सी कंपनियां और बहुत सारे लोग यहां से उठकर दूसरी जगहों पर चले गए| तो विस्थापन बहुत सारे कारणों से होता है, यह एक लगातार चलती हुई प्रक्रिया है|

6. आज भी राजनीति में स्त्रियों की उपस्थिति न के बराबर है| आपके उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' में भी ऐसी कोई स्त्री पात्र नहीं दिखलाई पड़ती है जो राजनीति में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ली हो| जबकि आपने आजादी के समय की राजनीतिक स्थिति को दिखाया है, ऐसे प्रसंगों में स्त्री पात्रों की कमी क्यों है?

उत्तर- इतिहास के परिप्रेक्ष्य में जब चीजों को आप रखते हैं तो आपका लेखन जो घटा उसके दायरे में होता हैं| आप कोई काल्पनिक आर्टिफिशियल पात्र बनाकर उसको आजादी के आंदोलन में दिखा दें ऐसा मेरे लिए तो संभव नहीं है| अब जैसे मैं सरला देवी के बारे में लिख रही हूं तो सरला देवी ने तो आजादी के आंदोलन में बहुत ज्यादा बचपन से ही हिस्सा लिया था| यह अपने आप में ही बने एक स्त्री पात्र की कहानी है| अब आप 'कलिकथा' की बात करती हैं तो उसमें अमोलक की मां वह शराब की दुकान में, विदेशी कपड़ों की दुकान के आगे धरना देने जाती है| और लोग उनको बड़े घृणित नजर से देखते हैं| वेश्या तक कहते हैं| ऐसा इसमें आया है तो वह एक मारवाड़ी स्त्री है जो धरना देने जाती है, गांधी जी ने जो कहा था कि सारी स्त्रियाँ जाकर धरणा दें का अनुसरण करती हैं| बाकी जो स्त्रियां आती हैं वह सभी पर्दे के अंदर घूंघट और दुपट्टे में बंद स्त्रियां हैं जो घर के अंदर भी घुंघट में ही सारे काम करती हैं| तो इसके खिलाफ किशोर बाबू की मुहिम है कि यह सब हटना चाहिए, यह सब बदलना चाहिए| जिसका बदला हुआ रूप आज हम देखते हैं कि हमारी पीढ़ी नहीं भी तो हमारे आगे की जो पीढ़ी है वह तो अभी से ही उतनी स्वतंत्र है और कैरियर ओरिएंटेड है जितने की और जगह की औरतें हैं| यदि पात्र एक खास तबके के पात्र हैं या वह एक खास समय के पात्र हैं तो इसलिए चूँकि वह मुख्य पात्र नहीं है तो उनका उन पर इतना जीवंश नहीं आता जितना सरला देवी का आता है| हां यदि मैं उन औरतों पर किताब लिखती जिन्होंने धरना दिया था तो हो सकता है कि वह एक पात्र उस तरह उभर कर आती जो उन्होंने फेस किया| और स्त्रियों का जो पॉलिटिक्स में पार्टिसिपेसन है वह तो देखिए धीरे-धीरे बढ़ रहा है| पूरी दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जहां स्त्रियों का राजनीति में आधा पार्टिसिपेसन हो| हमारे यहां अब जो नया लॉ पास हुआ है कि औरतों को 33% रिजर्वेशन मिलेगा इससे पंचायतों में बहुत सारी स्त्रियां आ गई हैं तो इस तरह बदलाव तो हो ही रहे हैं| फिर भी पितृसत्तात्मक समाज तो अपनी पकड़ बनाए हुए है आज भी उसमें कोई दो राय नहीं है|

7. क्या कानून और आरक्षण मानसिक बंटवारे को सामान्य कर सकता है? क्या इसका कोई बाइपास रास्ता भी है?

उत्तर- देखिए आरक्षण से मानसिक बंटवारे को तो सामान्य नहीं कर सकते हैं| कोई बहुत ज्यादा उसकी भूमिका नहीं है फिर भी ऐसा नहीं कह सकते हैं कि एकदम भूमिका नहीं है| क्योंकि एक तबका जब आर्थिक रूप से पावरफुल होता है तो फिर धीरे-धीरे उसका एक सामान्य जीवन में प्रवेश

हो जाता है| लेकिन हमारे यहां जो एक रोटी-बेटी का संबंध है हर माता-पिता चाहते हैं कि हमारे अपने ही समाज के अंदर रहे| फिर भी जो अंतर्जातीय विवाह होते हैं या दूसरी भाषा-भाषी के साथ जो विवाह होते हैं, वह तो होते ही है ऐसा भी नहीं है कि यह आज ही होते हैं पहले भी होते थे पर उनकी संख्या बहुत कम थी| लेकिन समाज का ऑर्डिनरी आदमी किसी तरह के आदर्श के चक्कर में न पड़कर सुविधा और सिक्योरिटी की सुरक्षा से हाथ नहीं धोना चाहता| मतलब कि उसकी बहुत सारी जो consequences हैं वह फेस न करनी पड़े| इसलिए यह जो मानसिक बंटवारा है बड़े शहरों में इतना जात-पात कोई नहीं देखता है जैसा कि छोटे गांव में होता होगा| आरक्षण से मतलब जो बहुत पिछड़ा वर्ग है अगर वह पावरफुल होता है तो धीरे-धीरे समाज में उसकी Acceptance बढ़ेगी ही उसमें कोई dought नहीं है| इस अर्थ में आरक्षण तो होना ही चाहिए हाँ दुरुपयोग तो कई मायने में जिनकी योग्यता नहीं होती है, उन्हें भी आरक्षण के बल पर नौकरियां मिल जाती है और जिनकी योग्यता होती है उनको नहीं मिलती है| यह तो है लेकिन उसके साथ-साथ यह है कि देखिए कि आज अगर हमारे समाज का बच्चा होगा तो वह जिस तरह की अंग्रेजी बोल सकेगा इसका जो एक्स्पोज़र होगा वह एक पिछड़ी जाति के बच्चे का जिसको जीवन में एक्सपोजर बहुत कम मिला है, वह अगर अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता भी है तो भी इसकी अंग्रेजी वैसी नहीं होगी जैसे हमारे घर के बच्चों की होती है| तो disadvantage तो है जिसको handicap भी कहते हैं तो उसके लिए उसे एक्स्ट्रा पॉइंट मिलनी चाहिए नहीं तो फिर यह समाज ऐसे ही चलता रहेगा समाज बदलेगा कैसे वह लोग कब ऊपर आएंगे कब समान नागरिक का दर्जा हासिल करेंगे| वे तो हजारों सालों से भुगत रहे हैं| अगर संविधान की निगाह में सब कोई एक बराबर है तो फिर उनको भी बराबरी तक पहुंचाने का हम रास्ता नहीं दिखाएंगे तो बराबरी तक आखिर कैसे पहुंचेंगे|

देखिए ऐसे उदाहरण तो बहुत मिलते हैं जो लोग बहुत ब्रिलियंट थे तो उनको रास्ता आज मिल जाता है| आज अंबेडकर को ही आप देखे लीजिए तो उनका क्या बैकग्राउंड था और अंबेडकर ने किस तरह से अभाव की जिंदगी में इतने सारे भाई बहनों के बीच में अपनी पढ़ाई की| वो इतने ब्रिलिएंट थे कि वह संविधान और असेंबली तक गए| बड़ौदा के महाराज ने उनको पढ़ाया| इसके साथ यह भी है कि कोई एक उदाहरण देकर उसे सामान्य लोगों पर लागू नहीं कर सकते| अगर ऐसा कोई ब्रिलियंट है तो वह अपने आप चमकेगा ही उसको कोई चमकने से रोक नहीं सकेगा शायद यह उम्मीद करते हैं| लेकिन बाकी लोग जो हैं जिनमें उस तरह की प्रतिभा नहीं है उनके लिए तो अतिरिक्त मौका मिलना ही चाहिए जिससे कि उनकी जो प्रतिभा है वह विकसित हो सके या कम से कम उसकी अगली पीढ़ी को उनके बच्चों को वह एक्स्पोज़र मिल सके जो उनको नहीं मिला| इसलिए संविधान जिन्होंने बनाया था उन्होंने यह उम्मीद की थी कि ऐसा समाज बन जाएगा जिसमें आरक्षण तक की जरूरत नहीं रहेगी| लेकिन वह समाज तो नहीं बना

इसलिए आरक्षण की जरूरत बनी है| इसलिए वह आज भी जरूरी रह गया नहीं तो आरक्षण की जरूरत खत्म ही हो जाती| अब इसका बाइपास का रास्ता तो क्या ही होगा|

8. 'कलिकथा : वाया बाइपास' की स्त्रियाँ विरोध क्यों नहीं करती हैं, वो या तो प्रश्न पूछकर रह जाती हैं या व्यवस्था को चुपचाप स्वीकार कर लेती हैं ऐसा क्यों है? उपन्यास में एक प्रसंग है, भुखमरी से जूझ रही बेटी और मां भीख मांगने इसलिए नहीं जाती क्योंकि उनके पास तन ढँकने को कपड़े नहीं हैं| उन्हें डर है इस समाज से कि भुखमरी के समय भी उनका यौन शोषण हो सकता है| वो इतनी सबल क्यों नहीं हैं कि इस स्थिति से लड़ सके|

उत्तर- यह बात बहुत लोगों ने मुझसे पूछी भी है अभी भी मैं लखनऊ गई थी तो वहां भी यह प्रश्न पूछे गए थे| ऐसा है कि एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हम जब रचना के द्वारा रचना के अंदर ही चाहते हैं कि सारा बदलाव हो जाए| लेखक पर लगातार यह दबाव बन रहा है कि वह अपनी सारी रचना के अंदर ही सारा विद्रोह सफल होता हुआ दिखा दें| लेखक पर इस तरह का जो दबाव है बहुत ही आर्टिफिशियल है और उससे बहुत ही आर्टिफिशियल लिटरेचर पैदा होता है जिसको लिखने की मेरी कोई तमन्ना नहीं है| लखनऊ में अखिलेश कह रहे थे कि कई ऐसे उपन्यास हैं जो बहुत अच्छे विषय को लेकर लिखे गए हैं, लेकिन बाद में उन पर दबाव काम करता है| जिसके बाद लेखक पात्र को सफल होता हुआ या उनके विद्रोह को सफल होता हुआ दिखाते हैं तो फिर वह एक तरह का साहित्य नहीं रह जाता है| ऐसे में लगता है कि आपने एक कहानी बना दी उसमें आपने ऐसा होता हुआ दिखा दिया जो यथार्थ नहीं है| जैसा कि नामवर सिंह ने किशोर बाबू की पत्नी के लिए कहा था कि वह जो चुप रहती हैं, उसका जो चुप रहना है, उस चुप रहने की जो मजबूरी है वह सो हजार वाक्य से भी ज्यादा मुखर है| वह पाठक के अंदर में इतना विद्रोह और दुख पैदा करती है कि पाठक उस स्थिति को बदलना चाहता है कि किसी औरत को ऐसा चुप ना रहना पड़े उसे भी जीने का अधिकार मिले| रघुवीर सहाय ने भी इस बारे में लिखा है कि रचना के अंदर में जो एक नकली विद्रोह दिखाया जाता है असल में रचनाकार का जो मंतव्य है कि समाज में यह बदलाव आए तो उस समाज में बदलाव बल्कि नहीं पैदा करेगा वह रचना में ही बदलाव दिख जाएगा और वही खत्म हो जाएगा| क्योंकि वह पाठक के मन को आघात नहीं करेगा इसलिए मुझे लगता है कि एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जो औरत इस तरह रही क्या हम उनका रहना झुठला दें| इस तरह का एक आर्टिफिशियल साहित्य रचने में मेरी कोई रुचि नहीं है।

9. तकनीक के स्तर पर हम जितने संपन्न हुए हैं, भावनात्मक स्तर पर उतने ही शून्य होते जा रहे हैं| इस विषय में आपकी क्या राय है?

उत्तर- देखिए यह तो है ही कि उपभोक्तावादी संस्कृति से चीजों की जो इतनी लालसा और जो क्रय शक्ति है वह भी बढ़ गई जिसकी चपेट में मध्य वर्ग ज्यादा है| खासकर के मोबाइल और जो इंटरनेट टेक्नोलॉजी आई है उसके कारण आदमी बहुत ही आत्मग्रस्त होता जा रहा है| उसके बाद व्यक्ति का जो समय है वह भी किसी दूसरे के साथ में ना बिताकर वह अपने मोबाइल के साथ बिताना चाह रहा है| जिससे मनुष्य असंवेदनशील ही बनता है| इंसान हर चीज को वर्चुअल रियलिटी के रूप में देखने लग जाता है| इंसानी दुख के साथ जो उसका जुड़ाव है उसके मर्म की जो बात है वो ख़त्म हो रही है| जब तक अपने अंदर महसूस करने की जो एक क्षमता है सहानुभूति व्यक्त कर जिंदगी को समझने की उसे अगर वह नहीं अनुभव कर पता है तो धीरे-धीरे उसकी संवेदना खत्म होती जाएगी और वह एक मशीन की तरह यांत्रिक जीवन जीने लगेगा| जिसे हम पूरे सिविलाइजेशन के तौर पर होता हुआ देख रहे हैं| इस तरह से मनुष्य का यांत्रिकीकरण कभी भी नहीं था जैसा कि आज दिखाई पड़ता है| जिसके कारण समाज में बड़े बदलाव आते ही हैं।

10. आपने किशोर बाबू के स्वप्न के भीतर स्वप्न का जिक्र किया है, उपन्यास में इसका क्या आशय है? स्वप्न के प्रतीक को आप कैसे देखतीं हैं?

उत्तर- देखिए काफी साल हो गए हैं इसे लिखे हुए तो उस तरह से मुझे डिटेलिंग नहीं याद है| तो भी मैं यह समझती हूं कि कोई पात्र जो सपने देखता है या लेखक ऐसा इस तरह से अपने पात्र को स्वप्न देखते हुए दिखता है जो शायद वह ऐसी बहुत सारी बातें जो ऐसे नहीं कहीं जा सकती तो उसे स्वप्न के माध्यम से कहना ही लेखक का उद्देश्य होता है| क्योंकि जो उड़ान है पात्र की स्वप्न के अंदर में वह रियालिटी में संभव नहीं है| रियालिटी हमेशा उसको नीचे दबाती है उसको रोकती है बहुत सारे उसके ख्वाब पूरे करने से| ऐसे में वह सपने में ख्वाबों को पूरा होता हुआ देखता है| शायद एक लेखक के भी जो ख्वाब हैं अपने पात्रों के माध्यम से दिखाना चाहता है| यह सपनों के माध्यम से कथा में आते हैं जो एक तरह के डिवाइस ही है| मेरे ख्याल से जब हम उन बातों को डायरेक्ट नहीं लिख सकते हैं तो हम स्वप्न के माध्यम से उन बातों को दर्शाने का प्रयास करते हैं ताकि पाठक उससे सीधे-सीधे जुड़ सके| अतः यह विषय मेरे लेखन में हर जगह इसी तरह से आए होंगे|

11. आपके इस उपन्यास में गालियों का प्रयोग न के बराबर है| ऐसा नहीं है कि जिस समाज को आपने उपन्यास में दिखाया है वैसे समाज में गालियों का प्रयोग न होता हो| कुछ साहित्यकारों ने तो पूरा उपन्यास गालियों के प्रयोग से भर रखा है| अतः साहित्य में गालियों का प्रयोग कितना उचित है इस विषय के ऊपर आपकी क्या टिप्पणी होगी?

उत्तर- देखिए बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं जिनको या तो साथियों के हिसाब से गालियां देना जरूरी लगता होगा या फिर उसका उद्देश्य यह होता होगा कि वह चौंकाए| वो पाठक को चौकाएं या यह बताएं की गलियां जो है वह साहित्य से कोई अछूती नहीं है उनको अछूत की तरह से ट्रीट नहीं किया जाए अगर वह जीवन में है तो साहित्य में भी आती हैं| हर व्यक्ति का अपना-अपना उद्देश्य हो सकता है कि किस तरह से गलियों का प्रयोग करते हैं| जैसे कि 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' में पहले ही पन्ने पर एक गाली आती है 'चूतिया' मतलब कि अब यह वहां इतनी सटीक बैठती है कि जिस कारण मैंने उसका प्रयोग किया है और किसी को चौंकाने के लिए नहीं| मुझे लगा कि वह बहुत कन्वे करती है कि समाज की वृत्ति को उसकी मेंटालिटी को किसी आदमी को मूर्ख ही बताना है लेकिन अगर हम मूर्ख बताते हैं तो वह जो उसको हर्ट करने के लिए या उसको बिल्कुल डाउनग्वेड करने के लिए जो शब्द आया वह उतना सटीक नहीं बैठता है| आमतौर पर हमारे सभ्य समाज में तो हम गालियों से बचते ही हैं और कई लोग हैं हमारे आसपास जो लगातार गालियों का प्रयोग करते हैं तो हम उनसे भी बचाना ही चाहते हैं| इसमें मेरी तो यही वृत्ति रही कि गलियों से बचना है गाली देने वाले लोगों से भी बचना है| मतलब अपने बच्चों को तो नहीं ही सिखाना चाहेंगे| मनुष्य जब सभ्य होता जाता है तो मेरे ख्याल से वह गलियों से दूर होता जाता है| साथ ही जिस समाज का आप चित्रण कर रहे हैं उस पर भी निर्भर करता है कि वहां पर अगर गलियों का प्रयोग होता है तो फिर आप गलियों का प्रयोग करते हैं| कई बार तो मुझे भी किसी किताब को पढ़ते हुए लगा कि भाई हद हो गई मतलब कि इसी पर आपको लग रहा है कि आपका उपन्यास खड़ा है तो यह दिक्कत वाली बात है| लेकिन मेरे ख्याल से कोई जजमेंट पास नहीं किया जा सकता क्योंकि लेखक जानता है कि उसने किस उद्देश्य से ऐसा काम किया और पाठक की अपनी receptivity है| हर पाठक की अपनी अलग सोच होती है कि वह क्या चाहता है या उसको कितना अच्छा लगता है या उसको कितना बुरा लगता है|

12. उपन्यास में 'सुमित' के माध्यम से आपने आत्महत्या की आंशिक रूप से चर्चा की है| बढ़ती आत्महत्या की समस्या को लेकर आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर- ऐसा है कि आत्महत्या को जानने की मेरी हमेशा से बहुत रुचि रही है| आत्महत्या का होना बहुत सी परेशानी का भी कारण रहा है| इसलिए मैं जब अख़बार भी पढ़ती हूं और जब आत्महत्या की न्यूज़ होती है तो अक्सर में उसे पूरा पढ़ती हूं कि क्या कारण रहा होगा जिससे इसने आत्महत्या की होगी| अर्थात् जीवन इतना कठिन लगने लगा कि इंसान अपना जीवन ही खत्म करने की सोचे| मेरे ख्याल से समाज में जो इतनी आत्महत्या बढ़ रही है उसका कारण आर्थिक सामाजिक बनावट है| हमारे ही देश में नहीं विदेश में भी देखें तो क्रेडिट कार्ड के लिए आत्महत्या होती है या अकेलेपन के लिए होती है| अलग-अलग कारण है लेकिन एक जो समाज की संरचना है हमारे यहां की अगर

बात करें तो उसमें जो आर्थिक दबाव है वह मुख्य है| मेरे ख्याल से आत्महत्याओं के पीछे व्यक्तिगत लेवल पर हारा हुआ मनुष्य जिसकी समाज में कोई इज्जत नहीं करता है इसलिए कि वह सफल नहीं हुआ और इस तरह की चीजों को लगातार झेलते हुए वह अपना जीवन खत्म करने की सोचता है| ऐसे तमाम कारण हैं जहाँ मुझे लगता है कि परिवारों का टूटना-बिखरना अंततः आर्थिक चीजों से ही रिलेटेड होता है|

13. आपका शोध कार्य रघुवीर सहाय जी पर है| उनके लेखन में स्त्री को कहाँ देखती हैं?

उत्तर- उनकी कविता बहुत अलग तरह की है एक सामाजिक राजनीतिक कविता जिनको कहेंगे| शुरू की कुछ कविता रूमानी भी है लेकिन बाद की जो उनकी कविताएं हैं वह बहुत ही सोसियो पॉलीटिकल कॉन्टेक्स्ट को लेकर कही गई है और खासकर लोकतंत्र में जिस तरह का क्षय हो रहा था इसके बारे में बहुत सारी कविताएं उन्होंने लिखी है जो मुझे काफी प्रभावित करती हैं| साथ ही स्त्री पर भी उनकी बहुत सी कविताएं हैं वे स्त्री से जुड़ी उसका वजूद बनाने वाली कविता भी लिखते हैं| जैसे एक कविता है उनकी 'कि सुंदर है, तू डरी हुई है, इसलिए नहीं तू सुंदर है'| पुरुष मानसिकता को रिफ्लेक्ट करती है उनकी कविता| इस तरह से एक और कविता है कि- एक बच्चा लेकर एक औरत बस में चढ़ती है तो कवि लिखता है कि- "और मुझ में कुछ दूर तक घिसटता हुआ" यानी कि वह बच्चे के प्रति उनकी संवेदना को व्यक्त करता है कि वह कहीं गिर ना जाए| समाज का एक ऐसा तबका है जिसका रोजमर्रा का जो जीवन है बहुत कठिन है और उनमें भी एक स्त्री होना उससे भी ज्यादा कठिन है| उनकी कहानी है 'किले में औरत' जो कि केबरे डांसर के ऊपर केन्द्रित है जिसमें एक स्त्री होने के दर्द को बहुत सहानुभूतिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है| इससे उनकी स्त्री विषयक गहरी अंतर्दृष्टि का पता चलता है|

(शोध कार्य के दौरान शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध-आलेख)

1- कुमारी, अर्पणा, (2022), 'असंभव का संधान' : 'मुझे चाँद चाहिए' के सन्दर्भ में, अप्रैल-जून 2022 समीचीन ISSN 2250-2335 UGC care listed journal.

2- कुमारी, अर्पणा, (2023), मुक्तिबोध का अंतर्द्वंद्व : जैनेन्द्र कुमार के पुरस्कृत उपन्यास 'मुक्तिबोध' के सन्दर्भ में, नवंबर 2023 द्विभाषी राष्ट्रसेवक ISSN 2321-4945 UGC Care Listed Journal.

3- कुमारी, अर्पणा, (2024), 'राग दरबारी' उपन्यास में लोकतान्त्रिक मूल्य, जनवरी-मार्च 2024, संकल्य, त्रैमासिक पत्रिका, ISSN 2277-9264 UGC Care Listed Journal.

LIST OF SEMINAR

(शोध कार्य के दौरान संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्र)

- कुमारी, अर्पणा, (2019), "भूमंडलीकरण और भारतीय भाषाएँ", हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम (गुवाहाटी का हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : पूर्वोत्तर भारत के विशेष सन्दर्भ में आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी)

- कुमारी, अर्पणा, (2023), "भारतीय लिपियों में समानता" हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं भारतीय भाषा समिति (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) का संयुक्त आयोजन (भारतीय भाषाओं में अंतर-संवाद : दशा और दिशा में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी)

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Arpana Kumari
Title	साहित्य अकादमी परस्कत हिदी उपन्यासों का विश्लषणात्मक अध्ययन (महिला साह ित्यकारों क विशष सदर् म)
Paper/Submission ID	1874072
Submitted by	jmdas@tezu.ernet.in
Submission Date	2024-05-26 18:29:49
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	16	A
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE

A-Satisfactory (0-10%)
B-Upgrade (11-40%)
C-Poor (41-60%)
D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
5	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
6	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
7	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
8	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
9	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
10	Paper Submitted to Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi	<1	Student Paper
11	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
12	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
13	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
14	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication

15	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
16	Paper Submitted to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur	<1	Student Paper